प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

[1]अमित कुमार सिंह, [2]डॉ0 आर0पी0 मिश्रा
[1]सहायक आचार्य एवं शोध छात्र, [2]विभागाध्यक्ष एवं सह आचार्य
[1]शिक्षक शिक्षा विभाग, [2]शिक्षक शिक्षा विभाग,
[1]हिंदू कॉलेज मुरादाबाद, [2]हिंदू कॉलेज मुरादाबाद,

सार

प्राथमिक शिक्षा ही प्रारंभिक शिक्षा कहलाती है जिससे छात्र की आगे की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होता है। इस कारण प्राथमिक स्तर के शिक्षकों का उत्तरदायित्व काफी बढ़ जाता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षक ही छात्रों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं तथा शिक्षक ही विद्यार्थियों के आदर्श होते हैं। क्योंकि प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण भाग कहलाती है, जिसपर शिक्षा रूपी इमारत खड़ी होती है, इसलिए शोधकर्ता को यह जानने की जिज्ञासा हुई कि प्राथमिक स्तर जैसे महत्वपूर्ण स्तर पर शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक किस प्रकार कक्षा में अपने व्यवहार, ज्ञान, शिक्षण कौशल एवं शिक्षण तकनीकी का प्रयोग करते हैं जिसमें शिक्षक की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति परिलक्षित होती हो तथा जो छात्रों की ज्ञान की आधारशिला सुदृढ़ करने में सहायक हो।

संकेत शब्द : प्राथमिक शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षा, शिक्षण कौशल, शिक्षण तकनीकी एवं शिक्षण अभिवृत्ति।

प्रस्तावना :

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक ही नहीं बल्कि यह राष्ट्रीय प्रगति तथा सभ्यता और संस्कृति के उत्थान के लिए भी अनिवार्य है। किसी भी देश की समृद्धि, विकास, कल्याण में शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो बालक की समस्त जन्मजात शक्तियों के स्वभाविक एवं विरोधहीन विकास में योगदान देती है, सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन प्राप्त करने में उसकी सहायता करती है, उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करती है, उसे इस योग्य बनाती है कि वह एक अच्छे नागरिक के कर्त्तव्यों एवं दायित्वों को भली प्रकार निभा सके। इसके अतिरिक्त शिक्षा उसके विचार एवं व्यवहार में ऐसा परिवर्तन करती है जो उसके अपने तथा समाज के लिए हितकर होता है। इस सन्दर्भ में जॉन लॉक कहते हैं कि ''जिस प्रकार पौधों का विकास कृषि के द्वारा होता है, ठीक उसी प्रकार बालक का विकास शिक्षा के द्वारा होता है।''

प्राथमिक शिक्षा में कर्त्तव्यनिष्ठ और उत्तरदायी अध्यापकों का काफी महत्वपूर्ण स्थान है, उनके योगदान के बिना शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक उन्नययन की कल्पना करना अर्थहीन ही होगा। वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा की उपयोगिता काफी बढ़ गयी है जिससे शिक्षकों का उत्तरदायित्व भी बढ़ गया है। शिक्षकों की अभिवृत्ति का प्रभाव छात्र एवं छात्राओं पर निश्चित रूप से पड़ता है क्योंकि शिक्षक ही वह दर्पण होता है जिसके सम्मुख खड़े होकर विद्यार्थी अपना भविष्य देखता एवं सवांरता है। शिक्षा समिति ने चरित्रवान एवं योग्य अध्यापकों की नियुक्ति पर बल दिया और उनके वेतन बढ़ाने की सिफारिश भी की। समिति ने यह भी सिफारिश की, कि प्रत्येक शिक्षक के पांच वर्ष के अन्तराल में सेवारत प्रशिक्षण दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा की कोई भी योजना अध्यापकों के सहयोग के बिना पूरी नहीं हो सकती है। उपर्युक्त वर्णित समस्यायें हमारे सामने विकराल रूप धारण किये हुए हैं, इस पर विजय असम्भव नहीं है परन्तु कठिन अवश्य है, इसलिए सारा उत्तरदायित्व शिक्षा और शिक्षकों पर आता है। शिक्षक ही इस बात के लिये उत्तरदायी हैं कि वे अपने छात्रों का निर्माण किस प्रकार से करते हैं क्योंकि शिक्षक ही वे साधन हैं जो किसी देश के भाग्य का निर्माण करते हैं। इसके लिये उसे अपने छात्रों को केवल ज्ञान ही प्रदान करना नहीं चाहिए वरन् आचरण, व्यवहार व व्यक्तित्व के अनेक गुणों से छात्रों को प्रभावित करके उनके जीवन का ऐसा निर्माण करना चाहिए, जिससे छात्र अपने व्यक्तित्व का सर्वोत्तम विकास करके राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें। इसके लिये अध्यापकों की प्रवृत्ति, अभिवृत्ति, अनुदेशन का उस पर प्रभाव पड़ता है। उपर्युक्त समस्या का शैक्षिक महत्व काफी विस्तृत है। विद्यालयों के लिये यह आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति को प्रभावशाली बनाने के लिये वे ठोस कदम उठाये।

अध्ययन के उद्देश्य :

- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति के विभिन्न मदों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :

- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की कक्षाध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की छात्र केन्द्रित व्यवहार से सम्बन्धित अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की छात्र सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन :

प्रस्तुत शोध पत्र में केवल मुरादाबाद जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों को शामिल किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

एल0 एल0 सिम्पॅम्ले (1988) ने शैक्षिक चलचित्रों का हाईस्कूल के छात्रों पर प्रभाव का अध्ययन किया। उसने पाया कि पूर्व स्थित अभिवृत्तियाँ अनुभव से पुनर्बलित होती है जब तक उनकी व्याख्या व नियन्त्रण में अन्तर नहीं आता।

शर्मा वी0 (1989) ने मेरठ वि0 वि0 में शिक्षकों की अभिप्रेरण प्रणाली का सम्बन्ध शैक्षिक अभिवृतित एवं व्यवसायिक सन्तुष्टि से करने हेतु देहरादून के 200 शिक्षकों के अभिप्रेरण, अभिवृत्ति व व्यवसायिक सन्तुष्टि के अध्ययन में पाया कि–

- ग्रामीण व शहरी एवं अनुभव कम व अधिक हाने से शिक्षकों की अभिवृत्ति पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पड़ता है।

- महिला व पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।
- महिला व पुरूष शिक्षकों की अभिप्रेरणा–प्रवृत्ति में भी सार्थक अन्तर पाया।

पियर्सन एल कैरोलिन (1995) शैक्षिक नेतृत्व विभाग फ्लोरिडा ने शिक्षक स्वतन्त्रता एवं कार्य सम्बन्धी अभिवृत्ति के विभिन्न चरों का अध्ययन किया। इसके लिए फ्लोरिडा के पब्लिक स्कूलों के शिक्षकों का जो वहां के नगरीय स्कूलों में अध्यापनरत थे उन्हें अंक द्वारा पत्राचार से शिक्षक विशेषताओं एवं शिक्षक क्रियाओं का पता लगाया व निष्कर्ष स्वरूप यह पाया गया कि स्वतन्त्र वातावरण के शिक्षक अपने व्यवसाय में अधिक सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं व कम कागजी कार्यक्रम के साथ छात्रों के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

अध्ययन की विधि :

सामान्य सर्वेक्षण विधि

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध पत्र में मुरादाबाद जनपद के 50 प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत समस्या अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति से सम्बन्धित है इससे सम्बन्धित उचित तथ्यों एवं आंकडों की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। मापनी में कुल 60 प्रश्न हैं। जिसमें शिक्षक अभिवृत्ति से सम्बन्धित 6 चरों को सम्मिलित किया गया हैं।

- अध्ययन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति।
- कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति।
- छात्र केन्द्रित व्यवहारों सम्बन्धी अभिवृत्ति।
- शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति।
- छात्रों से सम्बन्धित अभिवृत्ति।
- अध्यापकों से सम्बन्धित अभिवृत्ति।

सांख्यिकीय गणना :

प्रस्तुत शोध पत्र में सांख्यिकीय गणना हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

तालिका संख्या–1 अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति

अध्यापक समूह					
	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित		
थ्लंग	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
पुरूष	40	2.3	37	1.4	3.53
महिला	38	3.05	39	1.8	1.09

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों का अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी दृष्टिकोण अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की तुलना में ज्यादा विकसित है। जबकि प्रशिक्षित महिला एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–2 कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति

अध्यापक समूह					
	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित		
थ्लंग	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
पुरूष	39	3.02	36	2.06	2.60
महिला	38	2.01	36	1.04	3.45

प्रशिक्षित पुरूष एवं अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि प्रशिक्षित महिला एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की तुलना में प्रशिक्षित महिला अध्यापकों की कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति ज्यादा विकसित है।

तालिका संख्या–3 छात्र केन्द्रित व्यवहारों से सम्बन्धित अभिवृत्ति

अध्यापक समूह					
	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित		
थ्लंग	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
पुरूष	40	3.6	38	2.1	1.54
महिला	40	2.8	38	2.2	2.19

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की छात्र केन्द्रित व्यवहारों सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। छात्र केन्द्रित व्यवहार के सम्बन्ध में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षत पुरूष अध्यापकों का समान दृष्टिकोण है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की छात्र केन्द्रित व्यवहारों सम्बन्धी अभिवृत्ति में भी सार्थक अन्तर नही है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की भी छात्रकेन्द्रित व्यवहार के सम्बन्ध में एक जैसा दृष्टिकोण है।

तालिका संख्या–4 शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति

अध्यापक समूह					
	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित		
थ्लंग	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य
पुरूष	41	2.9	38	1.45	2.94
महिला	42	2.85	40	2.77	1.96

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है। इसलिये यह कहा जा सकता है कि प्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों का शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी दृष्टिकोण अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की तुलना में ज्यादा विकसित है। जबकि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है। इसलिये यह कह सकते हैं कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की इस सम्बन्ध में लगभग एक जैसा ही दृष्टिकोण है।

तालिका संख्या–5 छात्र सम्बन्धी अभिवृत्ति

अध्यापक समूह					
	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित		
थ्लंग	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य

पुरूष	42	2.6	39	2.32	2.73
महिला	41	2.87	38	2.3	3.53

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की छात्र सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की छात्र सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। प्रशिक्षित महिला अध्यापकों का छात्र सम्बन्धी दृष्टिकोण अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की तुलना में ज्यादा विकसित है।

तालिका संख्या–6 अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति

अध्यापक समूह					
	प्रशिक्षित		अप्रशिक्षित		
थ्लंग	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी मूल्य**
पुरूष	39	3.8	36	1.9	2.23
महिला	42	3.18	40	2.3	2

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष अध्यापकों की अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापकों की अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला अध्यापक इस सम्बन्ध में समान दृष्टिकोण रखती है।

तालिका संख्या–7

अध्यापकों की शिक्षण सम्बन्धी अभिवृत्तियाँ	अध्यापक समूह				
	प्रशिक्षित अध्यापक		अप्रशिक्षित अध्यापक		टी मूल्य
	मध्यमान	**मानक विचलन**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	
अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति	38.8	2.75	38.2	1.64	.95
कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति	38.4	2.48	36	1.45	4.2
छात्र केन्द्रित व्यवहार सम्बन्धी अभिवृत्ति	40	3.1	38	2.16	2.67
शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति	41.6	2.87	39.2	2.24	3.33
छात्र सम्बन्धी अभिवृत्ति	41.4	2.76	38.4	2.3	4.22
अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति	40.8	3.43	38.4	2.14	3

तालिका संख्या 7 के आँकड़ों से पता चलता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है इसलिये पहली परिकल्पना स्वीकृत होती है। जबकि कक्षा अध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। इसलिये दूसरी परिकल्पना निरस्त होती है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की छात्र केन्द्रित व्यवहारों से सम्बन्धित अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। इसलिये तीसरी परिकल्पना स्वीकृत होती है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर है। इसलिये चौथी परिकल्पना निरस्त होती है। प्रशिक्षित अध्यापकों एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की छात्र सम्बन्धी एवं अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति में भी सार्थक अन्तर है। इसलिये पांचवी एवं छठी परिकल्पना निरस्त होती है। उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण के अनुसार कहा जा सकता है कि प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति अप्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में अधिक विकसित है।

निष्कर्ष :

- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की कक्षाध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
- प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की छात्र केन्द्रित व्यवहारों सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। प्रशिक्षित अध्यापकों का शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी दृष्टिकोण ज्यादा विकसित है।
- छात्र सम्बन्धी अभिवृत्ति में भी पर्याप्त सार्थक अन्तर है इस सम्बन्ध में अप्रशिक्षित अध्यापकों का दृ ष्टिकोण प्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में कम विकसित है।
- प्रशिक्षित अध्यापकों एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अध्यापक सम्बन्धी अभिवृत्ति में भी पर्याप्त अन्तर है।
- प्रशिक्षित अध्यापकों का शैक्षिक दृष्टिकोण अप्रशिक्षित अध्यापकों की तुलना में अधिक विकसित होता है।

सुझाव–

अध्यापकों की शिक्षण कार्य के प्रति अभिवृत्ति एवं रूचि को बढ़ाने के लिये निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं–

- अप्रशिक्षित अध्यापकों में अध्यापन कार्य के प्रति सकारात्मक विचार विमर्श के अवसर दिये जायें।
- सेवारत अप्रशिक्षित अध्यापकों को समय–समय पर आयोजित होने वाले शिक्षकों के प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्यक्रमो सें भाग लेना चाहिये। जैसे अल्पकालीन शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम, ग्रीष्मकालीन शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम आदि।
- अध्यापकों के लिये यह आवश्यक है कि वे अद्यतन विधियों को सीखने के लिये तथा शिक्षण कौशल अभिवृत्तियों को और अधिक विकसित करने के लिये विभिन्न प्रकार के आयोजित होने वाले शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लें। जैसे– पुनर्बोधन पाठ्णक्रम, विचार गोष्ठियाँ तथा कार्यशालायें आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. अग्रवाल, आर0एन0 : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–3 द्वितीय संस्करण, आधुनिक मापन तथा मूल्यांकन शारदा।
2. गुप्ता एस0पी० : पुस्तक भवन यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान। (1995)
3. गैरेट हेनरी ई० : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी (1926) वकिल्सफिकर एण्ड सिमॉस लिमिटेड हेरा बिल्डिंग व स्प्राट रोड, वेलार्ड स्टेट मुम्बई 40038
4. जायसवाल सीताराम : व्यक्तित्व का मनोविज्ञान नवीनतम संस्करण, विनोद पुस्तक प्रकाशन आगरा।
5. पाठक पी0डी0 : भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2 13वाँ संशोधित संस्करण। (1994)
6. भार्गव एम0 : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन (1997), हर प्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशक कचहरी घाट, आगरा।
7. एच0 के0 कपिल : अनुसंधान विधियाँ (व्यवहार परक विज्ञानों में) 11वाँ संस्करण 2001 एच0 पी0 भार्गव बुक हाऊस आगरा।
8. शर्मा आर0ए0 : शिक्षा अनुसंधान के मूलतत्व एवं शोध प्रक्रिया, संस्करण 2011, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।

9. रमन बिहारी लाल एवं सुनीता पलोड : भारतीय शिक्षा का विकास, संस्करण 2012, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।

10. डा0 मालती सारस्वत : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, संस्करण 2012, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।

11. भटनागर सुरेश : आधुनिक भारतीय शिक्षा और समस्यायें, आर0 लाल बुक डिपों मेरठ, सक्सेना एन० आर० स्वरूप।

12. सुखिया पी0 बी0 मेहरोत्रा : शिक्षा के सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ, शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

13. www.basiceducation.com

14. www.ncert.com

15. www.educationministary.com

16. www.inflibnet.com